# 06 / 10 / 81 की अव्यक्त वाणी

## पर आधारित योग अनुभूति

### बाप समान मास्टर गुण मूर्त स्थिति का अनुभव

➢➢ मैं अपने मीठे बाबा की

➳_ ➳ मधुर स्मृति में

➳_ ➳ उनके स्नेह में खोई हुई हूँ

➳_ ➳ मैं ईश्वरीय स्नेह के

→ रंग में रंगी हुई हूँ

→ मैं बाबा के नयनो का नूर हूँ

■ स्वयम भगवान की नजर मुझ पर है

▶ सारे जहां की नजर जिस पर है

▶ वो मुझे देख रहा है

→ मैं बाबा की दिल तख़्तनशीं आत्मा हूँ

→ बाबा का सिकिलधा बच्चा हूँ

■ दिल से एक ही गीत निकल रहा है

▶ वाह बाबा वाह

▶ वाह मेरा बाबा वाह

▶ हाँ बाबा हाँ

→ मैं आत्मा अव्यक्त बापदादा से

■ मिलन मना रही हूँ

▶ यह मिलन बेहद का मिलन है

▶ मास्टर हजुर के आगे

▶ मैं जी हाज़िर हो रही हूँ

▶ पूरी लगन से

▶ उमंग उत्साह से

▶ ईश्वरीय सेवा में मगन हूँ

---

➢➢ मैं विशेष आत्मा हूँ

➳_ ➳ जिसे स्वयम भगवान ने

➳_ ➳ अपनी सेवाओं के लिए चुना है

→ बाबा गुणों का घृत डाल कर

→ मेरी विशेषताओं का

■ दीपक जगा रहे हैं

→ मैं मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ

- उमंग उत्साह की किरने
- सारे विश्व में फैला रही हूँ

→ मैं आत्मा सहज त्याग से

- अपना श्रेष्ठ भाग्य बना रही हूँ

→ मैं आत्मा एकरस स्थिति में स्थित हूँ

→ अचल अडोल हूँ

- दिल से बाप और
- बाप की सेवा की
- लगन में मगन हूँ
  - सेवा से प्यार होने से
  - मुझे बापदादा का विशेष प्यार मिल रहा है

→ मुझ आत्मा का एक ही लक्ष्य है

- सेवा, सेवा और सेवा
- देखना भी सेवा
- चलना भी सेवा
- बोलना भी सेवा
- करना भी सेवा
  - इससे चारो ओर सेवाओं में
  - सम्पन्नता आ रही है

→ मैं बाप समान मास्टर गुण मूर्त हूँ

→ विश्व की सदा शुभचिंतक हूँ

→ विश्व का कल्याण करने वाली

- विश्व कल्याणकारी हूँ
- श्रेष्ठ आत्मा हूँ